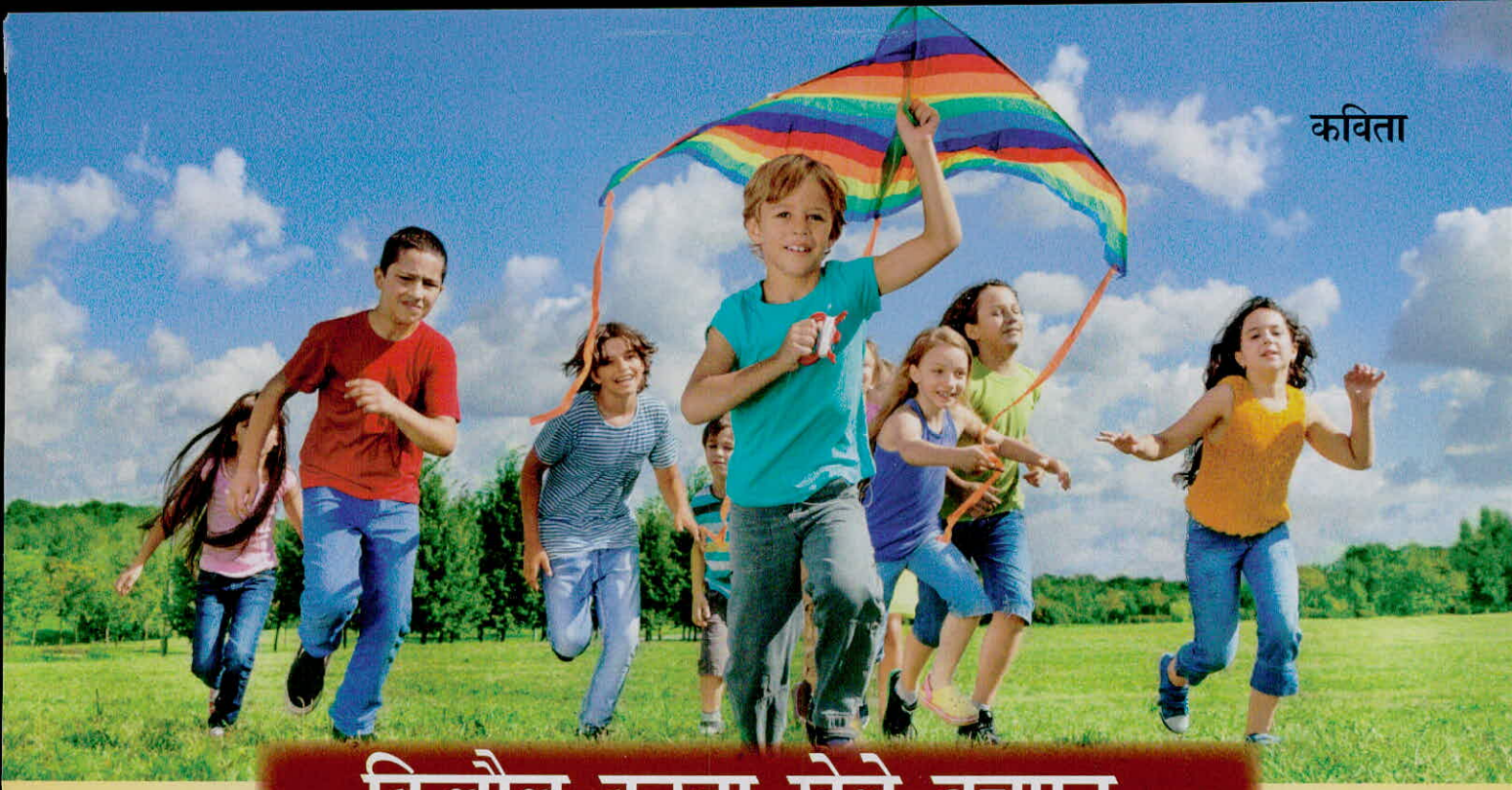

किलौल करता खेले बचपन...

गोपियन की गगरी में मार कंकड़
भाती कृष्ण को मस्ती सारी
चुराकर माखन खाने की लीला का दर्शन
किलौल करता खेले बचपन...

माँ ने लगाई आवाज बताया काम
पहले खेल लू जी भर फिर होगा काम
अपनी बाल अवस्था का दर्शन कराता मन
किलौल करता खेले बचपन...

रात भर माँ की करवट में सोने से
दिन भर शोर मचाते आंगन में
उंगली थामे चले नन्हें कदम
किलौल करता खेले बचपन...

उदित नये सूरज की तरह
मुदित करती संगीत की तान की तरह
मुहाने से झांकता दिखता बाकपन
किलौल करता खेले बचपन...

कागज के उन खेल खिलौनों से
बजते बर्तन की तान पर
हंसाता नाचता गाता खिलखिलाता मन
किलौल करता खेले बचपन...

औकात के मोल भाव से परे
क्षितिज पर बादलों जैसा भाव लिये
बिना तौले बोलता जुबान का हकलातापन
किलौल करता खेले बचपन...

जिंदगी के तजुबों का संकलन करता
हठ पर अडिग संकेत करता
उभरता उठता सीखता यौवन
किलौल करता खेले बचपन...

पड़ाव के इस सूने मोड़ पर
उन मीठी यादों का आंकलन करता
उन पलों को जीने की ललक लिये जीवन
किलौल करता खेले बचपन..

चंद पैसो से ही खुशी मिलतीं थी
आंगन की दौड़-भाग जब न अखरती थी
जब भेदभाव से कोसों दूर था मन
किलौल करता खेले बचपन...

एक वो अनमोल कागज की नाव से
वो उड़ती तितली के पीछे भागम-भाग से
वो बारिश की छिट-पुट बूंदों से
किलौल करता खेले बचपन...

बेअसर होती उन कोशिशों से
जीत का पृण भरे उस अहसास से
गल्तियों से सीखने के प्रयासों से
किलौल करता खेले बचपन...

नन्हें कदमों का साथ था
हर कोई मेरे पास था
अब क्यों नीरस होता जाता जीवन
किलौल करता खेले बचपन...

संपर्क करें:
अंकित सिंह राणा
शाहदरा
दिल्ली-110 032
मो. : 09718174082
ई-मेल : maurya34@hotmail.com